(30)
21-22

(26)

महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचालित

समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर

तह-बागलाण, जिला- नाशिक

हिंदी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय आभासी ई-संगोष्ठी

प्रमाणपत्र

पाटील निलेश सुरेशचंद्र

कर्मवीर आबासाहेब तथा ना.म.सोनवणे कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय

सटाणा, ता-बागलाण,जिस.नाशिक.

को,५ अगस्त २०२१ के दिन "हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना" इस विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय आभासी संगोष्ठी में मैं सहभागिता करने के उपलक्ष्य में यह प्रमाणपत्र सम्मानपूर्वक ——— है।

प्रा. रवींद्र ठाकरे
आयोजक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष

डॉ. उज्जन कदम
उपप्रधानाचार्य

डॉ. आर. पी. भामरे
प्रधानाचार्य

Made for free with Certify'em

August - 2021

E-ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFEREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE - 271

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना

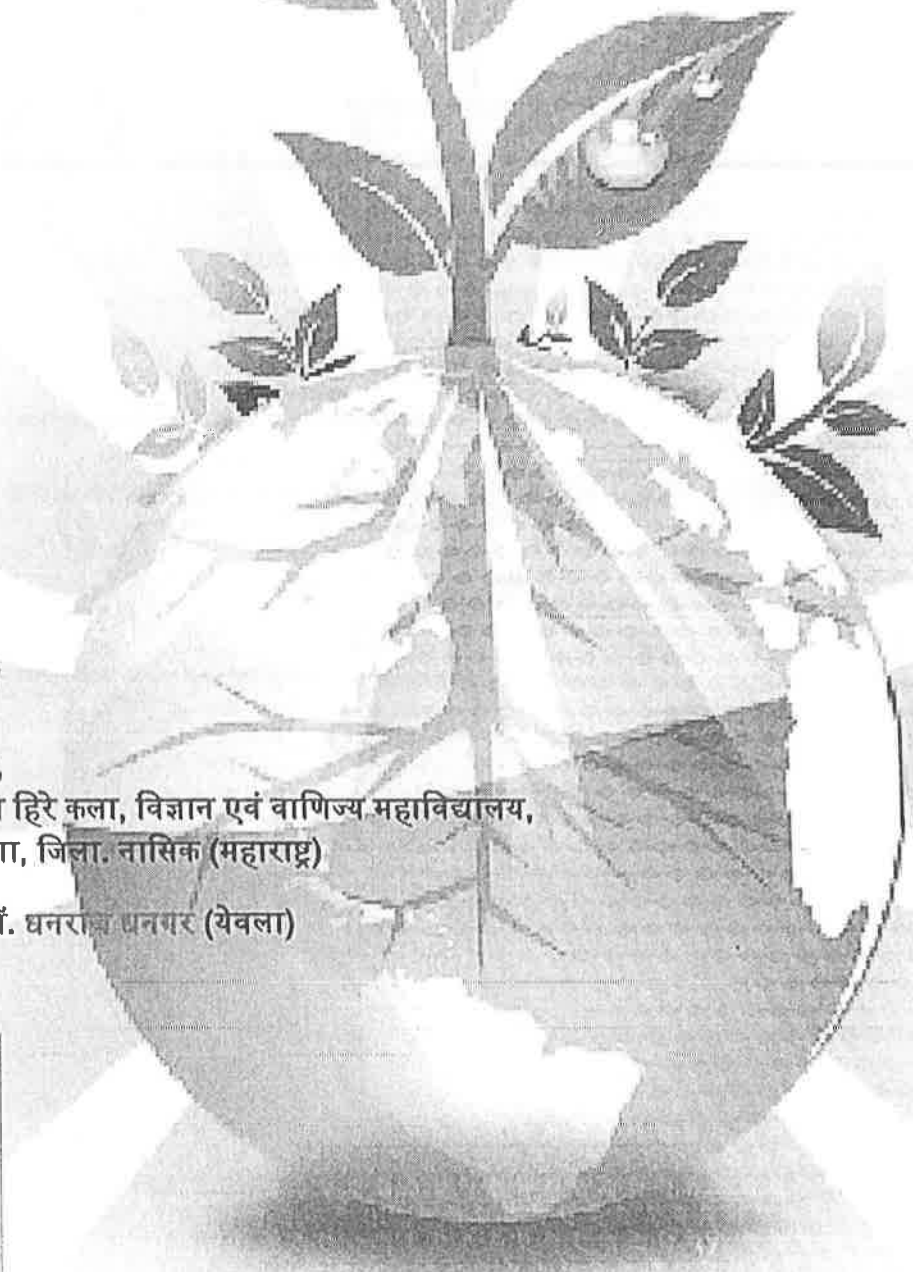

विशेषांक संपादक

प्रा. रवींद्र ठाकरे

हिंदी विभागाध्यक्ष,

समाजश्री प्रशांदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,

नामपूर, तह. सटाणा, जिला. नासिक (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर (येवला)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

37	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. जयश्री किनारीवाल-कुमावत	162
38	हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. निलेश पाटील	165
39	'भगत की गत' कहानी में अभिव्यक्त ध्वनि प्रदूषण की समस्या	डॉ. नानासाहेब जावले	169
40	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. योगिता घुमरे	171
41	ग्रामीण महिलाओं में पर्यावरण चेतना	डॉ. डी. बी. महाजन	174
42	डॉ.श्रीराम परिहार के 'पानी है अनमोल' निबंध में चित्रित पर्यावरण चेतना	डॉ. बाबासाहेब मुजाडे	177
43	हिंदी और गुजराती कविताओं में प्रकृति निरूपण	डॉ. मनीष पटेल	181
44	निर्मला पुतुल की कविताओं में पर्यावरण चेतना	डॉ. बबन थोरात	184
45	सूरसागर के बाललीला चित्रण में पर्यावरण चेतना	स्वाती ठकार	189
46	अज्ञेय के काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. राजेंद्र जाधव	194
47	दिनकर की 'उर्वशी'और पर्यावरण प्रकृति	डॉ. राजेंद्र कुमार चौधरी	198
48	हिंदी निबंधों में पर्यावरण चेतना	प्रा. अभिषेक कुमार पाण्डेय	201
49	हिंदी काव्य और पर्यावरण के समसामायिक संदर्भ	डॉ. अनिता वेताल	208
50	पर्यावरण की अवधारणा और तुलसीदास	डॉ. उमाकांत सालवकर	210
51	हिंदी लघुकथा में पर्यावरण चेतना	डॉ. मनोहर जमदाडे	215
52	पर्यावरण विमर्श विशेष संदर्भ 'विलुप्त होते जलाशय'	प्रा. नीहारिका देशमुख	218
53	हिंदी कविता में पर्यावरण जनजागृति	डॉ. विजयप्रकाश शर्मा	224
54	विभा रानी के संगीत नाटक 'पीर पराई' में सांस्कृतिक तथा सामाजिक पर्यावरण	स्वाती खलेकर	228
55	हिंदी गज़ल में पर्यावरण चेतना	प्रो. डॉ. जालिन्दर इंगले, प्रा. स्वप्ना बेंडकुले	232
56	अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानी में पर्यावरण चेतना	प्रा. मोहिद्दीन बाषा	237
57	पर्यावरण चेतना आधुनिकता बोध	प्रा. दिनेश अहिरे	239
58	साहित्य और पर्यावरण	डॉ. नितिन दत्तात्रेय पंडीत	242
59	'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में पर्यावरण चिंतन	डॉ. गेलजी भाई भाटिया	247
60	मानव, प्रकृति और साहित्य	डॉ. मुकेश वसावा	249
61	आधुनिक हिंदी महाकाव्य में पर्यावरण चेतना	प्रा. संतोष पगार, प्रा.राकेश वलवी	253
62	'हिमालय 'पर्यावरण चेतना का स्रोत	डॉ. ममता नानकचंद पंजाबी	256
63	समकालीन हिंदी कविताओं में पर्यावरण तथा सामाजिक चिंतन	डॉ. मनीषा मुगलिकर	261
64	छायावादी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. यशोदा मेहरा	265
65	समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	डॉ. विष्णु राठोड	270
66	पर्यावरण और छायावाद युगीन काव्य में अंत:संबंध	प्रो. डॉ. अनिता नेरे, प्रा. अनिता राजबंशी	275
67	हिंदी कहानी साहित्य में पर्यावरण संरक्षण	प्रा. राकेश वलवी, प्रा. संतोष पगार	278
68	बालसाहित्य में वन्यजीव वर्णन और पर्यावरण प्रदूषण	मोहनलाल वासवा	281
69	हिंदी कविता में पर्यावरण चेतना	सत्य नारायण प्रसाद	288
70	पर्यावरण चेतना और आधुनिक बोध	डॉ. संजय दवंगे	294
71	गीतांजलि श्री की कहानियों में पर्यावरण चेतना	प्रा. उज्वला अहिरे	296
72	पर्यावरण संरक्षण और मानव चेतना	डॉ. ओकेंन्द्र, डॉ. गीता	300
73	सुमित्रानंदन पंत की कविताओं में प्राकृतिक चेतना	डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी	305
74	पर्यावरण चेतना आधुनिक बोध (उपन्यासों में प्रकृति, प्राकृतिक एहसास और प्राकृतिक मूल्य चेतना)	प्रा. शाहू मधाळे	308

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue – 271 : हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
August - 2021

हिन्दी काव्य में पर्यावरण चेतना

श्री. निलेश एस.पाटील
सहायक प्राध्यापक
कर्मवीर आबासाहेब तथा नाम.सोनवणे कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
सटाणा, ता.बागलाण जि.नाशिक
ई.मेल – nspatil14@gmail.com
भ्रमरध्वनी - 7875199742

मनुष्य जन्म से ही प्रकृति गोद में अपना विकास और जीयन व्यतीत करता रहा है। यहा विश्व पंचमहाभूतों से बना है। पृथ्वी,आकाश,जल,वायू, अग्नि इ. हमारे आसपास जो भी प्रकृतिक संरचनाएँ है, उन सबको मिलाकर पर्यावरण बनता है। भारतीय मनीषा में यह बात दीर्घकाल से बैठी हुई है कि हम प्रकृति के ही अंग है। हमारा शरीर प्रकृतिक शक्तियों का ही पूँजीभूत रुप है। और सबसे अहं बात मनुष्य के पेट की क्षुधा प्रकृति से ही पूर्ण होती है।

भारतीय साहित्य और दर्शन संपूर्ण रुप से पर्यावरण केंद्रित रहे है। मुनष्य अनंतकाल से प्रकृति की पूजा करता रहा है। अनेक पेड़,पौधे,प्राणि,धरती,नदियाँ मनुष्य के लिए पुजनीय है जो आज भी है। और साहित्य मानव जीवन का दर्पण है इसलिए साहित्य में पर्यावरण का चित्रण सहजता से होता आया है। साहित्य हमें पर्यावरण के प्रति जागरुकता का संदेश देता आया है। हिंदी साहित्य में प्रचीन काल से प्रकृति चित्रण या पर्यावरण चित्रण विपुल मात्रामें मिलता है। इसी प्रकृति की देन को सुरक्षित रखने का संदेश गोस्वामी तुलसीदासजी 'रामचरितमानस' में देते है –

"रिझि-खीझी गुरुदेव सिष सखा सुसाहित साधु ।
तोरी खाहु फल होई भलु तरु काटे अपराधु ।"

अर्थात वृक्ष से फल तोड़कर खाना तो उचित है, लेकिन वृक्ष को काटना अपराध है। पर्यावरण चित्रण वैदिक काल से चला आ रहा है। भारतीय संस्कृति और पर्यावरण का उदात्त और पवित्र रुप वेद, उपनिषद, पुराण,सूत्रग्रंथ आदि सभी में दृष्टीगोचर होता है।

हिंदी साहित्य के आदिकालीन कवि मैथिल कोकिल विद्यापती के काव्य में प्रकृति चित्रण यत्रतत्र बिखरा पड़ा है।

'नन्दक नन्दन कदमक तरुवर धिरे धिरे मूरली बजाव':

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में महाकवि मलिक मोहम्मद जायसी,महाकवि सूरदास,गोस्वामी तुलसीदास, केशवदास के काव्य में प्रकृति चित्रण उदात्त तथा परिपूर्ण रुप में चित्रित है। 'पद्मावत' महाकाव्य में प्रकृति वर्णन अत्यंत सुंदरता से चित्रित है।

"कहा मानसर चाह सो पाई । पारस रुप इहाँ लगि आई ॥
भा निरमल तिंह पायँन्ह परसे । पावा रुप रुप के दरसे ॥

उपर्युक्त पद में पद्मावति के साथ-साथ मानसरोवर की सुंदरता का वर्णन है।

हिंदी साहित्य का रीतिकाल शृंगार तथा दरबारी साहित्य का काल है। इस काल में प्रकृति चित्रण प्राय: उद्दीपन रुप में मिलता है। दरबारी कवि और आकर्षण केंद्र नारी होने के कारण इन कवियों का ध्यान प्रकृति के स्वतंत्र रुप की ओर नही गया। फिर भी इनमें पद्माकर और सेनापति के काव्य में वसंत ऋतु का वर्णन मिलता है। कवि पद्माकर का व्रजभाषा में प्रकृति चित्रण उत्कृष्ट बन पडा है।

"भौरन को गुंजन बिहार बन कुंजन में,
मंजुल मलारन को गावनो लगत है।

मोरन को सोर घनघोर चहुँ ओरन,
हिंडोरन को वृंद छवि छावनो लगत है।
नेह सरसावन में मेह बरसावन में,
सावन में झुलिबो सुहावनो लगत है।"

उपर्युक्त उदाहरण में कवि ने वर्षा ऋतु के सौंदर्य को भौरों के गुंजार,मोरों के शोर और सावन के झुलों में देखा है। मेघ के बरसने में स्नेह को बरसते देखा है।

आधुनिक काल में छायावादी कवियो का पर्यावरण से घनिष्ठ नाता रह है। इनमें जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला,सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और आधुनिक काल के अनेक कवियों के काव्य में प्रकृति चित्रण अपनें निखार पर है।

जयशंकर प्रसाद अपनी कालजयी रचना 'कामयानी' का आरंभ करते हुए लिखते है।

'हिम गिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठे शिला के शीतल छाँह
एक पुरूष,भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह ।'
नीचे जल था उपर हिम था,
एक तरल था एक सघन
एक तत्व की ही प्रधानता
कहो उसे जड़ या चेतन ।'

छायावादी कवि सुमित्रा नंदन पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। पंत जी छाया,बादल,नौका विहार,चाँदनी आदी अनेक कविताओं में प्रकृति का मानवीय रुप प्रस्तुत करते है। उनकी ग्राम्या काव्यसंग्रह से ग्रामश्री कविता का उदाहरण-

'लहलह पालक, महमह धनियां
लौकी औ सेम की फैली
मखमली टमाटर हुए लाल
मिर्चों की बड़ी हरी थैली।"

प्रयोगवादी कवि अज्ञेय के काव्य में प्रकृति का शांत-सौम्य रुप अधिक मुखर होता है। वे कविता में प्रकृति को वरतते हुए उसे नई अर्थवत्ता देते है। उनकी 'खुल गई नाव' कविता का उदाहरण है।

"खुल गई नाव
घिर आई संध्या,सूरज डूबा सागर तीरे धुँधले पड़ने से
जल-पंछी
भर धीरज से मुक लगे मँडलाने।"

छायावादी कवि सुर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता 'जुही की कली' प्रकृति चित्रण का अनुपम उदाहरण है।

'विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न
अमल-कोमल-तनु – तरुणी जुही की कली।"

निराला जी ने इस कविता में प्रकृति का मानवीकरण प्रस्तुत किया है। इनके लिए प्रकृति सजीव और सप्रमाण है। वही कवि निराला अपनी 'स्नेह निर्झर वह गया है' कविता में प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से यौवन की क्षणभंगूरता एवं निराशा को कलात्मक रुप प्रदान करते है,

'आम की यह डाल जो सूखी दिखी,

कह रही है – "अब यहाँ पिक आ शिखी
नहीं आते,पंक्ति मैं वह हूँ लिखी ....।'

छायावादोत्तर काव्यधारा के कवि नरेंद्र शर्मा ने अपनी 'भोर हो गई' कविता में समय की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए नए युग की सुबह का वर्णन किया है। परिवर्तित प्रकृति के अनुसार समय सदा एक-सा नहीं रहता-

'भोर हो गई, मलय पवन का
आँचल फिर लहराया।
झोंका आया,दीप बुझ गया ;
नया फूल मुसकाया।"

बाबा नागर्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा है' में कवि ने बादल और प्रकृति के विभिन्न स्वरुपों का वर्णन किया है। इस कविता में अपने मानसरोवर यात्रा के स्मृतियों का वर्णन किया है। वहाँ छोटे-छोटे ओस के समान बादलो, मानसरोवर पर अनेक स्वच्छ और कल-कल बहती नदियाँ,झरनों को देखा है। वहाँ पर आये हंस के झुण्ड को देखा जो उमस और गर्मी से परेशान होकर आये थे। वे सब प्रकृति की गोद में खेलते हुए जीने का आनंद ले रहे थे-

'तुंग हिमालय के कंधो पर
छोटी बड़ी कई झीलें है,
उनके श्यामल नील सलिल में
समलत देशों से आ-आकर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त- मधुर विष-तंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है।
बादल को घिरते देखा है।'

हिंदी कविता के 'तीसरा सप्तक' के अग्रणी कवि कुंवर नारायण की कविता 'एक वृक्ष की हत्या' में वैज्ञानिक प्रगति के कारण प्रकृति के उजड़े हुए रुप का चित्रण हुआ है, तथा स्वास्थ्यपूर्ण जीवन जीने क लिए पर्यावरण की समस्या को दूर करने का संकेत देती है-

'अबकी घर लौटा तो देखा वह नही था
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घरके दरवाजे पर तैनात।
धूप में बारिश में
गर्मी में सर्दी में
हमेशा चौकन्ना
अपनी खाकी वर्दी में।'

उपसंहार-

इस प्रकार हिंदी साहित्य में अनेक कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति चित्रण कर पर्यावरण और मानव जीवन का सहसंबंध स्पष्ट किया है। भारतीय जीवन-पद्धति या परम्परागत चिन्तन में प्रकृति के सौन्दर्य का आनंद और प्रकृति के प्रति विनयशील रहने की सीख निहित है। हिंदी साहित्य में अनेक कवियों ने प्रकृति कह महत्ता को दर्शाते हुए पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागृति करने का प्रयास किया है। मानव को प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करके उसके उचित उपयोग का संदेश देता है। अत: हिंदी कविता गें पर्यावरण के विभिन्न

अंग,प्रकृति के सौंदर्य चित्रण व मानवीकरण से लेकर ग्लोबलाइजेशन,पर्यावरण प्रदूषण जैसी महत्वपूर्ण समस्याओं पर चिन्तन किया गया है।

संदर्भ- ग्रंथ:

1. रामचरित मानस — तुलसीदास — गीता प्रेस,गोरखपूर
2. कामायनी — जयशंकर प्रसाद — भारतीय साहित्य संग्रह
3. पदावली — विद्यापती — विहार राष्ट्रभाषा परिषद,पटना
4. जायसी ग्रंथावली — आ.रामचंद्र शुक्ल — ना.प्र.स. वाराणसी
5. पद्माकर ग्रंथावली — प.विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
6. युगधारा(कवितासंग्रह) — नागार्जुन — यात्री प्रकाशन दिल्ली
7. ग्राम्या(कवितासंग्रह) — सुमित्रानंदन पंत — लोकभारती प्रकाशन
8. इंद्र-धनु रौंदे हुए थे (काव्यसंग्रह) में संकलित 'खुल गयी नाव' कविता — अज्ञेय

स्त्रोत-

1) 'साहित्य विविधा' सं.प्रो.डॉ.सदानंद भोसले परिदृश्य प्रकाशन, मुंबई रचना - जुही की कली - रचनाकार - सुर्यकांत त्रिपाठी निराला - पृष्ठ क्रं.98-99
2) 'काव्य सरिता' – में संकलित कविता सं.डॉ.सुरेश साळुंखे स्नेहवर्धन प्रकाशन पुणे.रचना - स्नेह निर्झर बह गया है - रचनाकार - सुर्यकांत त्रिपाठी निराला - पृष्ठ क्रं.22-23 रचना - भोर हो गई - रचनाकार – नरेंद्र शर्मा - पृष्ठ क्रं.31-32 रचना - एक वृक्ष की हत्या – कुँवर नारायण - पृष्ठ क्रं.69-70